राबंगला में प्रकृति के चरम सौंदर्य के बीच

दुर्गापूजा में सिक्किम के एक खूबसूरत शहर राबंगला जाने का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा था। उसी सफर पर दिसम्बर के महीने में क्रिसमस के दिन जाना तय हुआ। सर्दियों के मौसम में पहाड़ी जगह पर जाने का यह पहला अनुभव था। सुबह नौ बजे हम कोलकाता हल्दीबाड़ी सुपरफास्ट एक्सप्रेस से न्यू जलपाईगुड़ी के लिए रवाना हुए। हमारा पहला पड़ाव था शान्तनु के पुराने दोस्त प्रणव का घर। यहीं से अगले दिन हम उनके साथ ही राबंगला के लिए रवाना हुए। दिसम्बर के सर्द मौसम की हल्की धूप में पहाड़ी रास्ते पर हमारी गाड़ी चल पड़ी थी। सेवक रोड पर छोटे से खूबसूरत सेवक स्टेशन को पीछे छोड़कर जैसे ही हमारी गाड़ी आगे बढ़ी तिस्ता नदी हमारे साथ चलने लगी। नदी में पानी बहुत कम दिखा। पिछली बार ही इसी रास्ते से सफर तय करते हुए तिस्ता नदी की तेज धारा के मिट जाने की कमी खटकी थी। तब ड्राइवर से सूचना मिली थी कि इस नदी पर बाँध बन जाने के कारण ऐसा हुआ है। इस बार भी तिस्ता नदी की उस चंचलता को न देख पाने की बात खटक रही थी।

शहर की भीड़-भाड़ से हम बहुत दूर निकल आए थे। पहाड़ी हरियाली आँखों को सुकून दे रही थी। पहाड़ी खामोशी भी हमारे भीतर रिसने लगी थी। दूर पहाड़ी पर बने घर ताश के घर जैसे दिखाई दे रहे थे। बादलों के बीच से धूप आँख मिचौली खेल रही थी। यह एक स्वर्गीय अनुभव था। प्राकृतिक सौंदर्य को महसूस करते हुए हम नामची के चार धाम पहुँच चुके थे।

नामची के चार दाम के शिव की सत्तासी फुट ऊंची विशाल मूर्ति बहुत दूर से ही दिखने लगती है। पुरी के जगन्नाथ धाम, रामेश्वरम् के शिव मंदिर, बद्रीनाथ धाम और सोमनाथ मंदिर के एक ही जगह पर होने की वजह से इसे चार धाम कहा जाता है। महाभारत में इस बात का जिक्र मिलता है कि अर्जुन ने शिव से पाशुपत अस्त्र पाने के लिए तपस्या की थी। माना जाता है कि शिवजी ने प्रसन्न होकर अर्जुन को नामची के इसी पहाड़ पर वह अस्त्र दिया था। यहीं पर चार धाम का यह मंदिर बना है। इसे सिद्धेश्वर धाम भी कहते हैं। पहाड़ के शिखर पर बना यह धाम मन को अनायास ही मोह लेता है. यहाँ से चारों ओर दिखने वाला नज़ारा आँखों को बाँध लेता है।

पहाड़ के शिखर पर बने नामची के चार धाम से रवाना होकर हम सेंड्रउप्से की ओर गुरु पद्मसंभव की मूर्ति को देखने चल पड़े थे। यह मूर्ति भी बहुत ऊँची होने के कारण दूर से ही दिखाई दे जाती है। उसी मूर्ति को देखकर हमने ड्राइवर भाई से उसके बारे में पूछा था। तभी वे हमें इस ओर ले आए थे। यहाँ आते हुए रास्ते में हमने रोप वे कार को नीचे उतरते हुए देखा। ड्राइवर ने बताया कि नीचे पत्थरों का बागीचा है। रोप वे से वहीं तक जाया जा सकता है। इसी रोप वे को चार धाम तक ले जाने की परियोजना भी बन चुकी है। तब पर्यटक इन तीनों जगहों पर रोप वे के जरिए पहुँच पाएँगे।

राबंगला के राबोंग हिल टॉप रिसोर्ट में हमारे ठहरने की व्यवस्था बहुत पहले से की जा चुकी थी। इस रिसोर्ट तक पहुंचने के लिए हमारी गाड़ी मूल रास्ते को छोड़कर एक छोटे से ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलने लगी। दोनों ओर झाड़-झंखाड़

और उस पर ऊबड़-खाबड़ रास्ता। मन जैसे एक खूबसूरत ख्वाब देखते-देखते अचानक जग गया था। यहां तक पहुँचने के रास्ते की इतनी बुरी हालत के बारे में हमें किसी ने बताया नहीं था। होटल के तीन मालिकों में से एक मालिक शायंतन बाबू से बात करके और इंटरनेट पर इसके बारे में लिखी अच्छी टिप्पणियाँ पढ़कर ही यहां रहने का निर्णय लिया गया था। शायंतन बाबू को यह बात भी पता थी कि हमारे एक साथी के पैर में गहरी चोट आने के कारण हमें दुर्गापूजा के दौरान यहाँ आने की योजना को रद्द करना पड़ा था। अभी भी चिकित्सकों ने उन्हें चलने में सावधानी बरतने को कहा है। इस जगह पर रहने का मतलब एक छोटे से इलाके में कैद हो जाना था। यहाँ तक कि रास्ते के ऊबड़-खाबड़ पन के कारण आप सुबह-शाम सैर पर भी नहीं निकल सकते। बस कमरे की बड़ी-बड़ी कांच की खिड़कियों से बाहर देखने के अलावा आपके पास कोई चारा नहीं रहता। उस पर कमरे में रोशनी की भी कमी थी। जिस वजह से मैं उस रात यात्रा संस्मरण लिखना भी शुरू नहीं कर पाई थी। कमरे में भी सीलन सी थी। काठ और चटाई से ढँकी दीवारों और छत के कारण लॉग हट में रहने का एहसास तो हो रहा था लेकिन कमरे की सीलन ने ठंड के एहसास को कई गुना बढ़ा दिया था। उस पर रोशनी की कमी ने भी मन को जैसे बुझा सा दिया था। ऐसे में अगर कुछ अच्छा लगा तो बस यहाँ के मेज़बानों का व्यवहार। ये मेज़बान दम्पत्ति भी इस रिसोर्ट के तीन मालिकों में से एक हैं। बाकी दो मालिक शायंतन और सजल बंगाल से हैं।

राबोंग हिल टॉप रिसोर्ट में तीन दिन रहने की योजना थी। लेकिन पहले ही दिन हमारे जेहन में ठगे जाने का एहसास जम गया था। सिक्किम में हम पहले भी आ चुके थे। यहाँ के लोगों की ईमानदारी और सहयोगी व्यवहार ही हमारे ज़ेहन में बसा हुआ था। इस सरज़मीं पर आकर बंगाल के ही एक व्यक्ति के हाथों इस तरह ठगे जाने का एहसास बहुत दुखद था। हम तय कर चुके थे कि हम भले ही यहाँ तीन दिन रहने के लिए आधी रकम अदा कर चुके हैं फिर भी अगले दिन हम किसी भी हालत में यहाँ नहीं रुकेंगे। हमें नुकसान उठाना मंजूर था लेकिन एहसासों के खाते में खट्टे अनुभव भरने के हम सख्त विरोधी थे। यहाँ से किसी भी हालत में निकलने का जुनून इस तरह सवार था कि शान्तनु सुबह छह बजे उठकर उस ऊबड़-खाबड़ रास्ते से नीचे उतर कर होटल की खोज में निकल पड़े। होटल पाने के बाद जब राबोंग हिल टॉप रिसोर्ट में हमने उसी दिन रिसोर्ट छोड़ने की बात छेड़ी तब तनाव का माहौल तैयार हुआ। शायन्तन और सजल इस रिसोर्ट के ऐसे मालिक हैं जो कलकत्ता में रहकर ही रिसोर्ट संबंधी सारे फैसले लिया करते हैं। उनके कहने पर हमें सूचित किया गया कि आधी बची हुई रकम अदा नहीं करने पर हमें रिसोर्ट छोड़ने नहीं दिया जाएगा। हमने फैसला किया कि जरूरत पड़ी तो थाने तक जाएँगे मगर जरूरत से ज्यादा रकम बुकिंग के दौरान ही अदा करने के बाद अब हम कोई रकम अदा नहीं करेंगे। रिसोर्ट के तीसरे मालिक स्वयं वहीं सपरिवार रहकर रिसोर्ट का काम देखते हैं। उनका व्यवहार काफी अच्छा था। लेकिन वे बाकी दो मालिकों के दबाव में थे। अंतत: उन्होंने हमारे ही सामने थाने में फोन लगाया। हमने सारी बात खुलकर थाने के अफसर इन्चार्ज से कही। आखिरकार हमसे बाकी बची आधी रकम नहीं ली गई और हम वहाँ से रवाना हुए। राबंग हिल टॉप रिसोर्ट से निकलकर हम सबने राहत की सांस ली।

हमारी खुशकिस्मती थी कि हमें जुमथांग होम स्टे में रहने की जगह मिली। इस होटल की मालकिन पेमा दी में एक अलग सा अपनापन था। यहीं वह सपरिवार रहती भी हैं। यहाँ की हर चीज़ को उन्होंने अलग-अलग जगहों से चुन-चुनकर

लगाया है। कमरे की छत पर लगी बांस की चटाई से लेकर लैंप शेड, काँच के सामान, रसोई घर का सामान, कमरे के असबाब, परदे सब में एक अनोखापन था। पेमा में आध्यात्मिकता और रूचिगत सौंदर्य का एक अनोखा मिश्रण था। होटल के कमरे के भीतर बाहर के जूते पहनकर घुसने की मनाही थी। कमरे के लिए उन्होंने अलग चप्पल कमरे में ही रखे हुए थे। पांच तल्ला इमारत के सबसे ऊपर के तल्ले में ध्यान कक्ष था। इस कक्ष की सजावट में भव्यता आसानी से महसूस की जा सकती है। यहाँ पहुंचकर हम सबका मन फिर खुशी से भर गया।

राबोंग हिल टॉप रिसोर्ट से निकलकर जुमथांग होम स्टे में आकर सामान रखते-रखते दोपहर के एक बज चुके थे। आसमान में बादल थे। कंचनजंघा की श्वेत चोटियाँ बादलों के पीछे छिपी हुई थीं। ड्राइवर भाई हमें राबंगला के सबसे भव्य और बेहद खूबसूरत बुद्ध पार्क ले गए। यह पार्क मन को स्वर्गीय अनुभूति से भर देता है। उस पर ऊँचे पहाड़ों से घिरी सुनहरे और कॉफी रंग की बुद्ध की १३० फुट ऊँची मूर्ति और मूर्ति को छूकर उड़ने वाले मेघ जैसे स्वर्ग में होने का एहसास दिला रहे थे। इस मूर्ति की स्थापना बुद्ध के २५५० की वर्षगाँठ पर हुई थी। बादल के कारण मौसम और भी सर्द हो गया था। हमने उस दिन पार्क की सैर करने के बजाय रालंग बौद्ध विहार को देखकर आने का फैसला किया। हम राबंगला में अगले दिन भी रुकने वाले थे। आशा थी कि अगले दिन धूप निकलेगी और तब बुद्ध पार्क मे घंटों बैठकर समय बिताना और आनंददायक होगा। यही सोचकर हम रालंग बौद्ध विहार की ओर रवाना हुए।

रालंग बौद्ध विहार के करीब पहुंचकर ही एक अलग दुनिया में होने का एहसास होने लगा था। पहाड़ की चोटी के करीब एक बड़ा मैदान था। जहाँ बौद्ध विहार के युवा और किशोर विद्यार्थी फुटबॉल खेल रहे थे। उन्हें खेलते हुए देखकर मेरी बेटी राशी और प्रणव का बेटा प्रमीत वहीं दौड़कर चले गए। हम वहीं खड़े होकर कुछ देर तक पहाड़ की चोटी पर खड़े झाऊ वृक्ष से होकर गुजरने वाले बादलों को देखते रहे।

रालंग बौद्ध विहार के भीतर प्रवेश करते ही हमारी नजर विशाल आंगन में कहीं खो गई। वहीं एक विद्यार्थी हमें मिला। उससे पूछने पर उसने बताया कि वह यहाँ बारह सालों से रह रहा है। दिसम्बर के महीने में घर जाने को मिलता है। लेकिन इस साल वह नहीं गया। उसका घर दार्जिलिंग मे है। उससे पता चला कि इस विहार में पहले बारह साल शिक्षा दी जाती है। फिर योग्य विद्यार्थियों को पहाड़ की चोटी पर बने ध्यान केंद्र में भेजा जाता है। वहाँ विद्यार्थियों को तीन साल छह महीने रहना पड़ता है। बाहर की दुनिया से रिश्ता ही कट जाता है। वहाँ से बाहर निकलने की इजाजत नहीं है। साढ़े तीन साल बाद वहाँ से विद्यार्थी निकल सकते हैं। अगर विद्यार्थी स्वयं को योग्य साबित कर पाया तो उसे अलग गुंफा में भेजा जाता है। उस ध्यान केन्द्र में जाने की इजाजत किसी को भी नहीं है। हम बौद्ध बिहार के पूजा घर में दाखिल हुए। बुद्ध और बौद्ध गुरू की भव्य सुन्हरी मूर्तियाँ, लाल, पीले, सुन्हरे, हरे रंग की नक्काशी, विद्यार्थियों के बैठने की जगह और उसके सामने स्थित तख्तों पर रखी किताबें और भीतर की मद्धिम रोशनी ने अलग सा समा बाँध दिया था। भीतर की शान्ति जैसे मन में रिस रही थी। मन वहाँ से लौटना नहीं चाह रहा था। लेकिन शाम ढलने को थी और हम होटल की ओर रवाना हुए।

रालंग बौद्ध विहार से लौटते वक्त मन शान्ति और आनंद से भरा हुआ था। दिन की शुरूआत भले ही परेशानियों से भरी थी, लेकिन अंत बेहद सुखद था। इस एहसास में पेमा दी की मेज़बानी ने और भी मिठास भर दिया था। रात को ठंड काफी बढ़ गई थी। पेमा दी ने होटल की रसोई में ही गरम-गरम फुल्के और सब्जी की व्यवस्था करके अपनेपन की डोर में मानो हमें बाँध लिया था। तब तक हमें सूचना मिल चुकी थी कि अगले दिन भी राबंगला में बरसात होने की संभावना है। यह सुनकर मन बैठ तो जरूर गया था लेकिन दिन भर की थकान ने हमें ज्यादा सोचने ही नहीं दिया।

सुबह नींद खुली तो आसमान में घने बादल छाये हुए थे। पास के पहाड़ भी बादलों की वजह से नहीं दिखाई दे रहे थे। हम सब का मन थोड़ा बैठ-सा गया था। लेकिन इस मौसम में भी शान्तनु सुबह की सैर पर लगभग सात बजे निकल गए थे। नींद खुलने के बाद नहा धोकर मैं ध्यान कक्ष में गई। वहाँ से जैसे ही बाहर निकली होटल में एक चहल-पहल सी दिखाई दी। बर्फ के छोटे-छोटे कंकड़ों जैसे गोल-गोल टुकड़ों को देखकर लोग खुश हो रहे थे। रास्तों को ढँक कर सफेद कर देने वाली बर्फ भले ही न गिर रही हो लेकिन इस हल्के से बर्फ के गिरने की वारदात ने भी पर्यटकों को बेहद खुश कर दिया था। तब भी हमें यह नहीं मालूम था कि उस दिन हमें राबंगला में स्विटजरलैंड में होने का अनुभव प्राप्त होने वाला है। बीच में जब हल्की-सी धूप निकली तब हम अपनी योजनानुसार बुद्ध पार्क की ओर रवाना हुए। धूप तो बस कुछ मिनटों के लिए निकली थी। बुद्ध पार्क के प्रवेश द्वार तक पहुँचते-पहुंचते आसमान बादलों से ढँक चुका था। धूप में बैठकर बुद्ध पार्क की शान्ति को महसूस करने की हसरत पूरी होने की संभावनाएं मिट चुकी थी।

बुद्ध पार्क काफी बड़ा है। हमने सोचा था कि भीतर चलने वाली बैटरी कार पर सवार होकर यहाँ घूमेंगे। इससे हमारी एक साथी जिनके पैरों में तकलीफ है वह भी हमारे साथ ही रह पाएंगी। यह पार्क भले ही बहुत बड़ा हो लेकिन पार्क में दाखिल होने के बाद एक ऊँचे स्थान से पूरा पार्क एक साथ नजर आता है। हम उस स्थान पर पहुँचे ही थे कि रूई की तरह बर्फ गिरने लगी। आँखें ऐसा नजारा पहली बार देख रही थीं। देखते ही देखते ज़मीन बर्फ से ढंक गई। आँखों के सामने दूधिया सफेद नजारा था। रूई-सी बर्फ गिरती जा रही थी। लोग बर्फ से खेलने लगे थे। किसी को भींग जाने का भय नहीं था। मेरी बेटी ने तो बर्फ के गोले बनाकर खेलने के चक्कर में हाथों की ज़ुराबे भिगो ली थीं। उसे रोकने की कोशिश करना नामुमकिन था। वो अपने ही धुन में मस्त थी। शान्तनु ने तुरंत कहा कि ऐसे मौके जिंदगी में बार-बार नहीं आते इसलिए बेटी को जैसे अच्छा लगे बर्फ से खेलने दो। नीचे उतरते वक्त कुछ ऊनी वस्त्र जरूरत के हिसाब से खरीद लिया जाएगा। तस्वीरें खींचते खींचते और बर्फ से खेलते खेलते पता ही नहीं चला कि कब बुद्ध पार्क में आए अधिकतर पर्यटक बाहर निकल चुके थे। हम बस कुछ एक लोग ही भीतर रह गए थे। बर्फ गिरने की खुशी में किसी को दोपहर का भोजन करने की जरूरत ही महसूस नहीं हुई। भीतर के कैफे से चाय, कॉफी, गर्म पकौड़े और मोमो का सेवन करते हुए बर्फ से खेलते खेलते वक्त कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। तब तक जमीन पर बर्फ की लगभग तीन चार इंच परत जम चुकी थी। ड्राइवर को फोन लगाने पर पता चला कि होटल से पेमा दी ने लगभग छह सात बार फोन करके गाड़ी से न लौटकर पैदल ही आने के लिए कहा है। क्योंकि होटल से थोड़ी दूरी पर तीन चार गाड़ीयाँ बर्फ की वजह से दुर्घटना ग्रस्त हो चुके थे। यह खबर सुनकर हमारे दिमाग से बर्फ का नशा

उतरा। अब हमें चार किलोमीटर पैदल चलकर नीचे उतरना था। ड्राइवर भाई के पास दो छाते थे। गाड़ी से छाता लेकर और गाड़ी के जरूरी कागजात लेकर गाड़ी का दरवाजा बंद करके ड्राइवर भाई भी हमारे साथ नीचे उतरने लगे।

बर्फ गिरने के बाद कुछ एक गाड़ियाँ इस रास्ते से जाने का जोखिम उठा चुकी थीं। गाड़ी के पहिए बर्फ पर जहाँ से गुजरे थे वहाँ की बर्फ दबाव से सख्त हो चुकी थी। उस पर चलने से फिसलने का भय था। इसलिए ड्राइवर भाई ने किनारे की झुरझुरी बर्फ पर चलने के लिए कहा। रास्ते पर चलते हुए पेड़ों के पत्तों पर, घर और गाड़ियों की छतों पर, और नीचे दिखने वाले पहाड़ी रास्तों पर जमी बर्फ किसी दूसरी दुनिया में होने का एहसास दिला रही थी। रास्ते पर चलते हुए जो भी मिला कह रहा था कि आप लोगों का सौभाग्य है कि यह नजारा आप देख पा रहे हैं। राबंगला में ऐसी बर्फ लगभग पंद्रह साल बाद गिरी है। राह चलते हुए हमे कई गाड़ियाँ रास्ते में रुकी हुई दिखाई दीं। इनमें वे लोग थे जो ज्यादा बर्फ पड़ने के कारण रास्ता बंद होने के भय से बुद्ध पार्क से काफी पहले निकल चुके थे। लेकिन उनकी गाड़ी को बीच में ही रोककर प्रकृति ने मानो उन्हें उसकी खूबसूरती में न रमने की सज़ा दी थी। राह चलते हुए रास्ते में ही एक छोटी सी दुकान से गरम चाय पीकर हम फिर पैदल चलने लगे। होटल में पेमा दी हमारे इंतजार में खड़ी मिली। होटल पहुँचकर कपड़े बदलकर हम सब हीटर के पास बैठ गए और फिर पेमा दी की रसोई में परोसा गया गरमागरम भोजन खाकर हम देर रात तक बर्फ गिरते हुए देखने के इस अनोखे अनुभव की याद को ताजा करते रहे।

राबंगला आए हुए तीन दिन बीत चुके थे। इस जगह को अलविदा कहने का दिन आ गया था। हमें सिर्फ इस बात का दुख था कि यहाँ आने के बाद से ही कंचनजंघा बादलों के पीछे ढँका हुआ था। दूधिया सफेद कंजनजंघा पर गिरती सुन्हरी धूप को देखने की हसरत पूरी नहीं हो पाई थी। सुबह जब नींद खुली तो पिछले दिन बर्फीले रास्ते से चलते हुए एक मुसाफिर की बात याद आई। उसने कहा था कि बर्फ गिरने के कारण कल कंचनजंघा दिखाई देगा। मन में मानो एक लहर-सी दौड़ गई। बिस्तर पर लेटे हुए ही मैंने कांच की बंद खिड़की की ओर देखा। मुझे बाहर धुंध ही दिखाई दी। फिर अचानक कांचपर दो तीन लकीरें दिखाई दी। यह कांच पर ओस की बूँदों के नीचे खिसकने के कारण बनी लकीरें थीं। उस पर नजर पड़ते ही कांच के पीछे बर्फ के पहाड़ के नज़र आने का हल्का सा आभास मिला। मैंने तुरंत कांच की खिड़की खोलकर देखा। श्वेत धवल पहाड़ मानो ध्यानस्थ सामने खड़ा था। कंचन जंघा की सफेद चोटी पर सुनहरी धूप गिर रही थी। सफेद बर्फ पर सुनहरी धूप गिरने के कारण पहाड़ की चोटियाँ भी सुनहरी दिखाई दे रही थीं। ठंड और बर्फ के गिरने के कारण कांच धुंधला दिख रहा था। उसे मैंने कोहरा या बादल समझ लिया था। लेकिन बाहर सुनहरी धूप थी।

वह उनतीस जनवरी की सुबह थी। हमें सुबह नौ बजे तक यहाँ से रवाना होना था। टेमी चाय का बागान और चालमथांग होते हुए उसी दिन हमें न्यू जलपाईगुड़ी पहुँचना था। समय कम था। लेकिन शान्तनु फिर भी सुबह सैर पर निकलने के लोभ का संवरण नहीं कर पाए। हमारे जूते पहले से ही भींगे हुए थे। चप्पल पहनकर ही दोनों निकल पड़े। सड़क पर आकर हमारी नजर सबसे पहले कंचनजंघा पर पड़ी। बर्फ का पहाड़ हमारे इतने करीब लगा कि हम हाथ बढ़ाए तो मानो उसे छू सकते हैं। आँखों का यह भ्रम बड़ा खूबसूरत था। सुबह से सड़क पर गाड़ियाँ चलनी शुरू हो गई थीं। इसलिए कल की

झुरझुरी बर्फ आज जमकर सख्त हो गई थी। शान्तनु पर तस्वीरें खींचने का धुन सवार रहता है। बर्फ पर चलने की उनकी आदत नहीं थी। तस्वीरें खींचने की धुन में कहीं फिसल न जाए मुझे इस बात का भी डर था। इसलिए भी मैं उनके साथ चप्पल पहनकर निकल आई थी। एक खुली जगह पर खड़े होकर हमने दूर तक दिखाई देने वाली हरी भरी घाटी को देखा। बर्फ से ढँकी ऊँची चोटियाँ भी वहाँ से दिख रही थीं। इस तरह कुछ समय बिताकर हम होटल लौट आए।

होटल से हम सुबह ग्यारह बजे रवाना हुए। चालमथांग और टेमी चाय के बाग तक जाने का रास्ता तब भी बन्द था। इसलिए हमने थांगयांग, सिंगटम, रैंग्पो से होते हुए सिलीगुड़ी जाने वाला रास्ता लिया। इस रास्ते के नज़ारे भी बड़े खूबसूरत थे। रंगीत नदी के बगल से निकले पहाड़ी रास्ते पर चलते हुए मन मानों कहीं उड़ रहा था। इस तरह चलते-चलते दोपहर हो गई। दोपहर के भोजन के लिए हमारी गाड़ी एक बेहद मनोरम जगह पर रुकी। सामने तिस्ता नदी बह रही थी। नदी के उस पार विशालकाय पहाड़ और पहाड़ के पैरों को लगभग धोते हुए तिस्ता नदी के बहने के दृश्य ने मन को बाँध लिया। यहाँ नदी अंग्रेजी के 'U' अक्षर सी बांक बनाकर बह रही थी। इस बांक ने तिस्ता की खूबसूरती को और भी बढ़ा दिया था। फालगुनी रेस्तारां के बरामदे से इस दृश्य को देखते हुए भोजन करने का आनंद ही कुछ और था। इस पूरे सफर में हमें महफ़ूज़ रखकर वैविध्य पूर्ण अनुभवों का साक्षी बनाने के लिए मेरा मन बार-बार ईश्वर को शुक्रिया अदा कर रहा था। अगर हम डर कर पहले ही दिन राबंग हिल टॉप रिसोर्ट को छोड़ने का फैसला नहीं लेते तो बर्फ गिरने की यह घटना हमारे लिए सजा बन जाती। क्योंकि बर्फ गिरने के बाद से ही उस रिसोर्ट तक जाने का रास्ता बंद हो गया था। हम उस रात लौटकर होटल तक ही नहीं पहुँच पाते। अगले दिन सिलीगुड़ी लौटने की बात तो सोचना ही नामुमकिन हो जाता। सिलीगुड़ी पहुँचकर जब कोलकाता में घरवालों से फोन पर बात हुई तब उन्होंने अपनी चिंता जाहिर की। टी.वी. पर यह समाचार लगातार आ रहा था कि बर्फ गिरने के कारण सिक्किम में बहुत पर्यटक फंस गए हैं। नेटवर्क न होने के कारण घरवालों से संपर्क भी नहीं हो पा रहा था। हमारे सिलीगुड़ी पहुँचने की बात सुनकर रिश्तेदारों ने भी राहत की सांस ली। यह सफर हमारे लिए बर्फ गिरने की घटना का साक्षी बन पाने और कंचनजंघा को इतने करीब से स्पष्ट देख पाने के लिए यादगार सफर बना रहेगा।